जानवरों पर प्रयोगों से कैसे बचें

हाल ही में यू.के. के नेशनल सेंटर फॉर दी रिप्लेसमेंट, रिफाइनमेंट एण्ड रिडक्शन ऑफ एनिमल्स इन रिसर्च (एनसी3आर) ने कुछ दिशा निर्देश जारी किए हैं जिनसे चिकित्सा अनुसंधान में जंतुओं का अनावश्यक इस्तेमाल रोकने में मदद मिल सकती है।

इन दिशा निर्देशों में बताया गया है कि शोधकर्ता अपने अनुसंधान की डिज़ाइन किस तरह बना सकते हैं कि जीवित प्राणियों के अनावश्यक व अनैतिक उपयोग को टाला जा सके। दिशा निर्देश इस संदर्भ में शोधकर्ताओं के लिए मददगार साबित हो सकते हैं।

दरअसल, एनसी3आर ने पिछले वर्ष एक सर्वे किया था। इस सर्वे ने उन मुश्किलों को रेखांकित किया था जिनकी वजह से जंतुओं पर किए गए प्रयोगों का वैज्ञानिक महत्व जानना असंभव हो जाता है। इनमें एक प्रमुख दिक्कत यह पहचानी गई थी कि कई बार ऐसे अध्ययनों की विस्तृत जानकारी अप्राप्य होती है। मसलन, यू.के. व यू.एस. के 371 ऐसे अध्ययनों में पाया गया कि मात्र 59 प्रतिशत में यह जानकारी दी गई थी कि उस अध्ययन का उद्देश्य क्या था। 4 प्रतिशत अध्ययन तो ऐसे थे जिनमें यह तक नहीं बताया गया था कि उनमें कितने जंतुओं का उपयोग किया गया था।

एनसी3आर की मुख्य कार्यकारी विकी रॉबिंसन का मत है कि इस तरह की बुनियादी जानकारी के अभाव में इन अध्ययनों के नतीजों की उपयोगिता बहुत सीमित हो जाती है और इनसे विज्ञान की प्रगति की उम्मीद नहीं की जा सकती। इनमें खतरा यह रहता है कि पैसा बरबाद होगा और जंतुओं को बेमतलब इस्तेमाल किया जाएगा।

इन दिक्कतों को देखते हुए जो दिशा निर्देश विकसित किए गए हैं, उनका व्यापक असर होने की उम्मीद की जानी चाहिए, खास तौर से इसलिए कि इस पहल को कई शोध वित्तदाताओं व शोध पत्रिकाओं का समर्थन प्राप्त है। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत नवंबर 2010
अंक 262

- भोपाल त्रासदीः सामूहिक विस्मृति की त्रासदी
- विज्ञान की आम समझ पर भौतिकी का दबदबा
- बनते-बिगड़ते विचारों के वैज्ञानिक वाइसमैन
- ब्रह्माण्ड के कुछ रहस्यमय पिण्ड
- महिलाओं की मज़बूत रीढ़